(19) ट्रेड– पौधशाला
(कक्षा– 12)

उद्देश्य–

1–पौधशाला उद्योग का औद्योगीकरण देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना।
2–अधिकतम पौध तैयार करना, बिक्री बढ़ाना, वृक्षारोपण कर देश में वन उद्योग को प्रोत्साहन देना और आय में वृद्धि करना।
3–कम से कम पूंजी लगाकर प्रति हेक्टेयर अधिकतम उत्पादन तथा वर्ष भर आय का उत्तम स्रोत।
4–पौधशाला उद्योग में दक्षता प्राप्त कर भविष्य में जीविकोपार्जन के लिए सक्षम बनाना।
5–श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना, आत्मनिर्भर बनने एवं एक कुशल नागरिक निर्माण में सहायक होना।
6–विभिन्न प्रकार के पौधों को बड़े पैमाने में उगाकर व्यापार बढ़ाना तथा देश की अनुभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होना।
7–पौध उत्पादन, रख–रखाव एवं वृहत् मात्रा में परिवहन सम्बन्धी यन्त्रों, उपकरणों आदि का समुचित ज्ञान प्राप्त कर अपने निजी जीवन को उपयोगी बनाने में सक्षम होना।
8–देश की ऊसर भूमि सुधार, भूमि कटाव रोकने, वर्षा कराने, वायु मण्डल को शुद्ध करने तथा खाद्य समस्या को हल करने का उत्तम स्रोत एवं व्यवसाय।

रोजगार के अवसर–

1–पौधशाला उद्योग की विभिन्न इकाइयों में रोजगार मिलने की सम्भावना।
2–पौधशाला उद्योग में स्व–रोजगार या अपना निजी व्यवसाय चलाना।
3–पौध उत्पादन, बिक्री आदि व्यवसाय या उनका व्यापार कर सकता है।
4–पौध उत्पादन की अलग–अलग इकाइयां खोलकर, उत्पादन बढ़ाकर स्वयं दुकान खोल सकता है।
5–पौधशाला उद्योग से सम्बन्धित यन्त्रों, उपकरण एवं अन्य सामग्री विक्रय का उद्योग चला सकता है।
6–पौधशाला उत्पादन एवं बिक्री सम्बन्धी समितियां बनाकर स्वयं तथा अन्य को रोजगार उपलब्ध करा सकता है।

पाठ्यक्रम–

इस ट्रेड में तीन–तीन घन्टे के पांच प्रश्न–पत्र और भी प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। अंकों का विभाजन निम्नवत् रहेगा–

(क) सैद्धान्तिक–

	पूर्णांक		उत्तीर्णांक	
प्रथम प्रश्न–पत्र	60	300	20	100
द्वितीय प्रश्न–पत्र	60		20	
तृतीय प्रश्न–पत्र	60		20	
चतुर्थ प्रश्न–पत्र	60		20	
पंचम प्रश्न–पत्र	60		20	
(ख) प्रयोगात्मक–				
आन्तरिक परीक्षा	200	400		200
बाह्य परीक्षा	200			

टीप–परीक्षार्थियों को प्रत्येक लिखित प्रश्न–पत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 20 तथा योग में 33 प्रतिशत अंक एवं प्रयोगात्मक परीक्षा में 50 प्रतिशत उत्तीर्णांक पाना आवश्यक है।

प्रथम प्रश्न–पत्र
(पौधशाला प्रौद्योगिकी का आधारभूत ज्ञान)

1–पौधशाला का महत्व–प्रमुख पौधशालाओं का नाम तथा उनका अध्ययन। 10
2–पौधशालाओं का वर्गीकरण, एक वर्षीय, द्विवर्षीय तथा बहुवर्षीय पौधों के लिये, रबी, खरीफ, जायद, सब्जी फसलों की पौधशाला, साधारण मिश्रित एवं विशेष पौधशाला, फल, फूल तथा सब्जियों की पौधशाला। 20
3–पौधशाला के अंग–सात वृक्ष क्षेत्र, बीज सेवा क्षेत्र, गमला क्षेत्र, प्रतिरोपण क्षेत्र, ग्रीन हाउस, प्रवाहन क्षेत्र 20
4–ग्रीन हाउस–ग्लास हाउस, पाली हाउस, गैस व प्रवाहन क्षेत्र। 10

द्वितीय प्रश्न–पत्र
(पौधशाला पौध प्रवर्धन)

1—लैंगिक प्रजनन—परिभाषा, लाभ, हानियां, शुद्ध बीज की प्राप्ति एवं चुनाव, बीज परीक्षण, अंकुरण क्षमता, जीवन्तता,
अंकुरण प्रभावित करने वाले कारण, अंकुरण पूर्व बीज शोधन इतिहास व महत्व। 20

2—अलैंगिक वानस्पतिक प्रजनन—परिभाषा, लाभ, हानियां, कटिंग द्वारा जड़, तना तथा पत्ती प्रवर्धन विधियां परिवर्तित
अंगों जैसे बल्ब, राइजोम ट्यूमर, फाम, सकर, गुटी, प्रबर्धन—हवा गुटी, भूमि गुटी विधि, कम बांध विधियां—साधारण
भेंट कलम, जीप भेंट कलम, जीनियर भेंट कलम, गुन्टी एवं खुर भेट कलम। 20

3—कालिकायन—टी शील्ड कालिकायन, बेच रिंग कालिकायन। 10

4—टीषू कल्चर प्रवर्धन तकनीकी—टीषू कल्चर, कोषिका कल्चर, कैलष कल्चर आदि। 10

तृतीय प्रश्न—पत्र
(पौधशाला प्रबन्ध, अलंकृत एवं शोभाकार पौधे)

1——अलंकृत बागवानी——परिभाषा, इतिहास व महत्व 10

2——शोभाकार पौधों का वर्गीकरण 10

3——मौसमी फल, पौधशाला तथा उसकी देखभाल। 10

4——किनारीदार झाड़ीनुमा तथा शोभाकार वृक्षों की पौधशाला तथा उनकी देखभाल। 10

5——कैक्टस——आर्किड्स, पाम फर्न, जलीय पौधों की पौधशाला तथा उनकी देखभाल। 10

6——फाइकस वर्ग के शोभाकार पौधे। 10

चतुर्थ प्रश्न—पत्र
(वानिकीय पौधों की पौधशाला)

1——वानिकी पौधों का प्रवर्धन तथा उनकी पौधशाला विधि। 20

2——वानिकी पेड़ों के बीज तथा संग्रह बीज भण्डारण विधियां। 20

3——वानिकीय पौध प्रतिरोपण तथा देख—रेख। 20

पंचम प्रश्न—पत्र
(पौध विपणन एवं प्रसार)

1——क्रय—विक्रय——सावधानियां, पैकिंग, नामकरण भेजने का माध्यम, सामग्री तथा सावधानियाँ। 14

2——पौधशाला रजिस्ट्रेशन, लाइसेन्स, गुण प्रभावीकरण, प्रक्रिया तथा उनके मापदण्ड, प्लान्ट क्वाइन्टाइन नियम। 26

3——पौधशाला प्रसार——लोकप्रियता, वृद्धि के तरीके, विज्ञापन के माध्यम, समय तथा विषय वस्तु। 20

प्रयोगात्मक

1——प्रवर्धन तरीकों, भेंट कलम, गूटी कलम बांधना, कालिकायन के विभिन्न तरीकों का ज्ञान।
2——कालिका शाखा का चुनाव।
3——अलंकृत एवं शोभाकार पौधों की पहचान।
4——मौसमी फूलों की पहचान।
5——लतर झाड़ीनुमा, पाम पद वैक्टरस की पहचान।
6——अलंकृत पौधों का प्रवर्धन।
7——पौध उठाना।
8——पौध पैकिंग करना।
9——पौध ढलाई के तरीके।
10——अभिलेख तैयार करना।
11——वानिकीय पौधों की पहचान।
12——गड्ढे बनाना, वृक्ष रोपाई।

प्रयोगात्मक परीक्षा की रूपरेखा

समय——5 घण्टे

प्रयोगात्मक परीक्षा——

(1) वाह्य परीक्षा——

परीक्षार्थियों को तीन प्रयोग दिये जायें——

प्रयोग——1 (दीर्घ प्रयोग)
प्रयोग——2 (दीर्घ प्रयोग)
प्रयोग——3 (दीर्घ प्रयोग)

(2) सतत् आन्तरिक मूल्यांकन––

(क) सत्रीय कार्य

(ख) कार्य–स्थल का प्रशिक्षण

नोट––प्रयोगात्मक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना आवश्यक है।

संस्तुत पुस्तकें––

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन का नाम एवं पता	मूल्य	संस्करण वर्ष
1	2	3	4	5	6
1	पौधशाला व्यवसाय	सर्वश्री–– कृष्ण पंत कोठारी एवं आनन्द बिहारी श्रीवास्तव	रंजना प्रकाशन मन्दिर, 12/13, सूई कटरा, आगरा	रु0 15.00	1989–90
2	भारत में पौधों की कृषि	डा0 मुरारी लाल लवनिया	सिंघल बुक डिपों, बड़ौत, मेरठ	20.00	1987
3	सब्जियाँ एवं पुष्पोत्पादन	श्री वेम, श्री सिंह	भारतीय भण्डार, बड़ौत, मेरठ	15.00	1988
4	भारत में फलोत्पादन	श्री कृष्ण नारायण दुबे	रामा पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	15.00	1988
5	फल विज्ञान	डा0 रामनाथ सिंह	भारतीय कृषि अनुसंधान, परिषद, कृषि वन, नई दिल्ली	12.00	1984
6	फ्रूड नर्सरी प्रैक्टीसेज इन इन्डिया	एल0 बैधता रतीमन (अंग्रेजी)	दि इण्डियन प्रिन्टर्स वर्ग, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली	15.00	1988
7	पौधशाला प्रौद्योगिकी	डा0 ओमपाल सिंह	अलंकार पुस्तक भवन, बड़ौत, मेरठ	16.00	1989